केंद्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, मैसूर
हिन्दी अनुभाग

भारत देश के अग्रमान्य रेशम उत्पादन अनुसंधान संबंधी इस संस्थान में भारत संघ की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए सुसंपन्न राजभाषा एकक कार्य कर रहा है जिसकी स्थापना 1987 में 1 वरिष्ठ अनुवादक व 1 हिन्दी टंकक के साथ हुई । 1988 में हिन्दी अधिकारी की तैनाती के बाद पूर्णरूपेण हिन्दी अनुभाग का कार्यारंभ हुआ । संस्थान में राजभाषा कार्यान्वयन के बढ़ते चरण के साथ-साथ हिन्दी पदों की संख्या में भी बढ़ोत्तरी हुई । फिलहाल हिन्दी अनुभाग में 1 उपनिदेशक (राजभाषा), 1 सहायक निदेशक (राजभाषा), 1 कनिष्ठ अनुवादक (हिन्दी), 1 कनिष्ठ आशुलिपिक (हिन्दी) व 3 निम्न श्रेणी लिपिक (हिन्दी टंकक) कार्यरत हैं जिनके संयुक्त और दृढ़ प्रयासों से संस्थान में सुचारु रूप से राजभाषा कार्यान्वयन कार्य प्रगति पथ पर अग्रसर है । यह संस्थान राजभाषा नियम **1976** के नियम **10(4)** के अंतर्गत अधिसूचित कार्यालय है । इसके कुल 37 अधीनस्थ कार्यालयों में से 6 कार्यालयों को राजभाषा नियम 10(4) के अंतर्गत अधिसूचित कराया गया है । शेष कार्यालयों में भी राजभाषा कार्यान्वयन कार्य प्रगति पथ पर चल रहा है । संस्थान में राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त किया जा रहा है ।

संस्थान में राजभाषा कार्यान्वयन कार्य डॉ. एस.एम.एच.क़ादरी, निदेशक के भव्य मार्गदर्शन में निम्नलिखित मुख्य बिंदुओं पर-प्रगतिपथ में चल रहा है :

- पुरस्कार : संस्थान के वैज्ञानिकों यथा डॉ. एस.एम.एच.क़ादरी, निदेशक, डॉ. सुरेन्द्र दत्त शर्मा, वैज्ञानिक-डी, डॉ. दिनेश दत्त शर्मा, वैज्ञानिक-सी व डॉ. गंगेश बहादुर सिंह, वैज्ञानिक-सी (हाल ही में बाहर स्थानांतरित) से मूल रूप से हिन्दी में लिखित "शहतूती रेशम उत्पादन : एक पारिअनुकूल प्रतिस्पर्धात्मक ग्रामीण उद्यम" शीर्षक पुस्तक के लिए "हिन्दी में मौलिक पुस्तक लेखन के लिए इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार - वर्ष **2009-10"** की श्रेणी के अंतर्गत पुरस्कार प्राप्त हुआ ।

  संस्थान को "केंद्रीय रेशम बोर्ड की राजभाषा चलशील्ड योजना के अंतर्गत हिन्दी अधिकारी वाले कार्यालयों" की श्रेणी में वर्ष **2004-05** तथा वर्ष **2008-09** में दो बार संघ की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रशस्तिपत्र प्राप्त हुआ ।

  राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट कार्य निष्पादन के लिए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, मैसूर द्वारा संस्थान को दो बार पुरस्कार प्राप्त हुआ है ।

  संस्थान के तीन वैज्ञानिकों द्वारा मूल रूप से हिन्दी में लिखित 3 शोध-पत्रों को केंद्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, रांची में 26 व 27 अप्रैल 2011 को आयोजित दो दिवसीय अखिल भारतीय राजभाषा तकनीकी संगोष्ठी में प्रस्तुत किया गया । इसमें संस्थान की डॉ. कणिका त्रिवेदी, वैज्ञानिक-डी को रेशम उत्पादन सत्र में अपने शोध-प त्र के लिए प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ ।

  संस्थान के अधीनस्थ कार्यालय क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केंद्र, सेलम को वर्ष 1997-98 के दौरान राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन में श्रेष्ठ निष्पादन के लिए केंद्रीय रेशम बोर्ड राजभाषा चलशील्ड योजना - हिन्दी कर्मचारी रहित कार्यालयों (**"ग"** क्षेत्र के लिए) की श्रेणी में दूसरा स्थान प्राप्त हुआ है व उसे प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया है ।

क्षेरेअकें, सेलम को वर्ष 2009-10 में निष्पादित राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, सेलम की राजभाषा चलशील्ड योजना में तृतीय स्थान प्राप्त हुआ है । पहले भी उक्त कार्यालय को तत्संबंधी पुरस्कार 4 बार प्राप्त हुआ है ।

इसके अतिरिक्त नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अनंतपुर से क्षेत्रीय रेशम उत्पादन उत्पादन अनुसंधान केंद्र, अनंतपुर को पुरस्कार प्राप्त हुआ है व नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ऊटी-कूनूर द्वारा उप रेशमकीट प्रजनन केंद्र, कूनूर कार्यालय को 2 बार राजभाषा कार्यान्वयन में श्रेष्ठ निष्पादन के लिए चल वैजयंती शील्ड व प्रमाणपत्र प्राप्त हुए हैं व उक्त कार्यालय के श्री जगदीशन, निम्न श्रेणी लिपिक को प्रशासन अनुभाग की मिसिलों पर राजभाषा हिन्दी में प्रशंसनीय कार्य करने के प्रति राजभाषा पाणिनी पुरस्कार- शील्ड एवं प्रमाणपत्र से सम्मानित किया गया है ।

- हिन्दी प्रशिक्षण : हिन्दी का प्रयोग करने में हिन्दी प्रशिक्षण की महत्वपूर्ण भूमिका होने की दृष्टि से प्रशिक्षण पर जोर दिया जाता है । फिलहाल भाषा प्रशिक्षण हेतु संस्थान में कोई पदधारी शेष नहीं है । विभागीय व्यवस्था द्वारा शेष पदधारियों की हिन्दी टंकण प्रशिक्षण दिया जा रहा है ।

- द्विभाषी प्रयोग : राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के अधीन आने वाले सभी कागज़ात द्विभाषी में जारी किए जाते हैं; सभी फार्म, पत्रशीर्ष, रबडमोहरें, सूचनरा पट्ट, नामपट्ट, लिफाफे, पहचान-पत्र, परिचय-पत्र आदि द्विभाषी हैं । वार्षिक कार्यक्रम के विभिन्न लक्ष्यों की प्राप्ति सुनिश्चित करने हेतु जॉचबिंदु (फोटोप्रति कक्ष, भंडार अनुभाग, प्रेषण कक्ष के यहाँ) बनाए रखे गए हैं ।

- इलेक्ट्रानिक उपकरण : संस्थान में प्राय: सभी अभिकलित्रों में ओपन ऑफिस सॉफ्टवेयर की व्यवस्था है जिससे हिन्दी, अंग्रेजी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में काम करने में सुविधा हुई है।

- हिन्दी पुस्तकों की खरीदी : संस्थान में राजभाषा के सम्यक प्रसार व प्रचार को दृष्टि में रखते हुए प्रख्यात लेखकों, कवियों के ज्ञानवर्धक पुस्तकों, कार्यालयीन कामकाज के लिए उपयोगी व मनोरंजक पुस्तकों, हिन्दी दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक तथा मासिक पत्रिकाएँ मँगवाई जा रही हैं ।

- हिन्दी कार्यक्रम : संस्थान में हर साल 14 सितंबर को राजभाषा दिवस तथा सितंबर में राजभाषा पखवाड़ा, हिन्दी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है । हर तिमाही में नियमित रूप से अधिकारियों व कर्मचारियों के लिए पूर्णकालिक हिन्दी कार्यशालाएँ आयोजित की जाती हैं । हिंदी के प्रगामी प्रयोग का मूल्यांकन करने तथा आवश्यक मार्गदर्शन देने हेतु समय-समय पर अनुभागों व अधीनस्थ कार्यालयों का निरीक्षण किया जाता है ।

- प्रकाशन : संस्थान के वार्षिक प्रतिवेदन के सामान्य अंश द्विभाषी में प्रकाशित किए जाते हैं । इसके अलावा संस्थान के बारे में विवरणिका, प्रौद्योगिकी संबंधी कुछ पुस्तिकाएँ व चौपन्ने हिन्दी में भी उपलब्ध हैं ।

संस्थान के वैज्ञानिकों यथा डॉ. एस.एम.एच.क़ादरी, निदेशक, डॉ. सुरेन्द्र दत्त शर्मा, वैज्ञानिक-डी, डॉ. दिनेश दत्त शर्मा, वैज्ञानिक-सी व डॉ. गंगेश बहादुर सिंह, वैज्ञानिक-सी (हाल ही में बाहर स्थानांतरित) से मूल रूप से हिन्दी में लिखित "शहतूती रेशम उत्पादन : एक पारिअनुकूल

प्रतिस्पर्धात्मक ग्रामीण उद्यम" शीर्षक पुस्तक हिन्दी में प्रकाशित की गई ।

संस्थान की स्वण जयंती के उपलक्ष्य में संस्थान में 28 व 29 जनवरी 2011 को आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन "रेशम उत्पादन अभिनवकरण : पहले और बाद में" के अवसर पर विमोचित स्मारिका में डॉ. एस.एम.एच. क़ादरी और अन्य के दो लेख हिन्दी में प्रकाशित हुए हैं ।

संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा हिंदी में मूल रूप से लिखित शोध-पत्रों का केंद्रीय रेशम बोर्ड के इंडियन सिल्क और गृह-पत्रिका रेशम भारती में प्रकाशन होता है ।

- हिन्दी का प्रयोग : हिन्दी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिन्दी में दिया जा रहा है । राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारितानुसार हिन्दी में पत्र भेजने का लक्ष्य गत 16 वर्षों से लगातार प्राप्त किया जाता रहा है । पत्राचार में आसानी हेतु 215 द्विभाषी मानक मसौदों को तैयार किया गया जिनका संबंधित अनुभागों में हिन्दी का अधिक प्रयोग करने हेतु प्रयोग किया जा रहा है ।

  संस्थान के कुछ वैज्ञानिकों द्वारा हिंदी में मूल रूप से शोध-पत्र लिखे जाते हैं ।

  संस्थान के प्रशिक्षण प्रभाग द्वारा चलाए जा रहे प्रशिक्षण कार्यक्रमों में कुछ कार्यक्रम हिन्दी / मिली-जुली भाषाओं के माध्यम से चलाए जा रहे हैं ।

- हिन्दी टिप्पण- आलेखन प्रोत्साहन योजना : संस्थान में हिन्दी टिप्पण-आलेखन प्रोत्साहन योजना जारी है जिसके अंतर्गत संस्थान के अलावा अधीनस्थ कार्यालयों के पदधारी भी हर वर्ष भाग लेते हैं तथा पुरस्कार प्राप्त करते हैं ।

- राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक : संस्थान के निदेशक महोदय की अध्यक्षता में गठित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की हर तिमाही में नियमित रूप से बैठकें बुलाई जाती हैं जिसमें राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी चर्चा होती है । संस्थान के प्रतिनिधि हर छमाही में मैसूर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में भाग लेते हैं । संस्थान के अलावा कुछ अधीनस्थ कार्यालयों में भी राजभाषा कार्यान्वयन समिति गठित की गई है व बैठकें आयोजित की जा रही हैं ।

इस तरह संस्थान में सभी पदधारियों के सहयोग से राजभाषा कार्यान्वयन कार्य प्रगति पथ पर अग्रसर है व राजभाषा नीति का अनुपालन हो रहा है ।

%%%%

CENTRAL SERICULTURAL RESEARCH AND TRAINING INSTITUTE, MYSORE

HINDI SECTION

In Central Sericultural Research and Training Institute, Mysore, which is the premier Institute for sericultural research in India, a well equipped Official Language Unit is working for implementation of Official Language policy of the Union of India. The unit started with 1 Senior Translator (Hindi) and 1 Hindi Typist in the year 1987. In the year 1988, a full-fledged Hindi section started to function with the posting of a Hindi Officer. In commensurate with the functions increased, the number of Hindi posts were also created in the Institute. At present, there are one Deputy Director (Official Language), one Assistant Director (Official Language), 1 Junior Translator(Hindi), 1 Junior Stenographer(Hindi) and 3 Lower Division Clerks (Hindi Typists) are working in the section, whose combined and consistent efforts made Official Language Implementation work run progressively. **The Institute is a notified office under rule 10(4) of the Official Languages Rules 1976.** Not only the main Institute, but also 6 subordinate offices out of 37 offices have been notified under rule 10(4) of the O.L. rules 1976. In the remaining offices also implementation of O.L. is going on progressively. The targets prescribed in the Annual Programme issued by the Department of Official Language have continued to be achieved in the Institute.

The Official Language Implementation work of the Institute is at tremendous progress on the following important points under the splendid guidance of Dr. S.M.H.Qadri, Director.

- **Awards :** The book entitled "**Shahtooti Resham Utpadan : Ek Paarianukool Prathispardhatmak grameen Udyam"** written originally in Hindi by scientists of this Institute viz. Dr. S.M.H.Qadri, Director, Dr.Surendra Dutt Sharma, Scientist-D, Dr. Dinesh Dutt Sharma, Scientist-C and Dr. Gangesh Bahadur Singh, Scientist-C (recently transferred out) **bagged a prize** under the category of "**Indira Gandhi Official Language award for original book writing in Hindi for the year 2009-10".**

The Institute has **received citation for the year 2004-05 and 2008-09** for the excellent performance in the implementation of Official Language policy of the Union under the category of "Official Language rolling shield scheme of Central Silk Board for the offices having Hindi Officers".

The Institute has **received award two times from Town Official Language Implementation Committee, Mysore** for excellent performance in Official Language implementation.

Three research papers originally written in Hindi by three scientist of this Institute were presented in the Two day All India Official Language Technical Seminar held on 26 and 27th April 2011 at Central Tasar Research and Training Institute, Ranchi. **In the Sericulture session of the seminar, Dr. Kanika Trivedi, Scientist-D of this Institute got first prize for her research paper.**

Regional Sericultural Research Station, Salem, a subordinate office of this Instituute was **honoured with a citation for receiving second prize** for the excellent performance in the implementation of Official Language Policy during the year 1997-98 under the category of "**Official Language rolling shield scheme of Central Silk Board for the offices without Hindi Staff (for C region)".**

Regional Sericultural Research Station, Salem was awarded third place in the Official Language Rolling Shield Scheme of Town Official Language Implementation Committee, Salem for its performance in the implementation of Official Language policy for the year 2009-10. In the previous years also the Office has received **such award 4 times**.

In addition, Regional Sericultural Research Station, Anantapur has received award from Town Official Language Implementation Committee, Anantapur and Satellite Silkworm Breeding Station, Coonoor office has received **Rolling Trophy and Certificate twice** for the best performance in Official Language implementation from TOLIC, Ooty-Coonoor and Shri Jagadishan, LDC of Coonoor office has been honoured with **Official Language Paanini Award – shield and certificate** for his commendable work done in Hindi in the files of Administration section.

- **Hindi Training :** Hindi Training plays an important role in using Hindi, so emphasis is given on training. **At present in the Institute no official is remained to be trained in Hindi.** The officials remained to be trained in Hindi typing are being trained through departmental arrangement.

- **Bilingual Use :** All the documents coming under section 3(3) of the Official Languages Act 1963 are issued bilingually. All the forms, letter heads, rubber stamps, sign boards, nameplates, envelopes, identity cards, visiting cards etc. are in bilingual form. **Checkpoints** (at Photocopy cell, Stores section, Despatch cell) have been made to ensure the achievement of various targets prescribed in the annual programme.

- **Electronic equipments :** Almost all the computers available in the Institute have Open Office software which has facilitated to do work in Hindi, English and other Indian Languages.

- **Purchase of Hindi Books :** In view of propagating Official Language in the Institute appropriately, books of famous authors & poets, books that are useful for official work and entertainment books are purchased and Hindi Daily, weekly, fortnightly and monthly magazines are subscribed.

- **Hindi programmes :** Every year 14th September is celebrated as Hindi Day and in the same month Hindi Fortnight and Competitions are organized. In every quarter full day Hindi workshops are organized regularly for officers and staff. For assessing the progressive use of Hindi and to give necessary guidance, Sections and Subordinate Offices are inspected from time to time.

- **Publications :** The general matter of the Annual Report of the Institute is published bilingually. In addition to this, brochure of the Institute, booklets and pamphlets regarding technology are available in Hindi also.

The book titled “**Shahtooti Resham Utpadan : Ek Paarianukool Prathispardhatmak grameen Udyam”** written originally in Hindi by the scientists of this Institute viz. Dr. S.M.H.Qadri, Director, Dr.Surendra Dutt Sharma, Scientist-D, Dr. Dinesh Dutt Sharma, Scientist-C and Dr. Gangesh Bahadur Singh, Scientist-C (recently transferred out) has been published in Hindi.

Two articles in Hindi written by Dr. S.M.H.Qadri and others have been published in the souvenir released during the national conference “Sericulture Innovation : before and beyond” held on 28 and 29th January 2011 at the Institute on the occasion of golden jubilee celebration of the Institute.

Research papers written originally in Hindi by scientists of this Institute are published in Indian Silk and House journal Resham Bharathi of Central Silk board.

- **Use of Hindi :** Letters received in Hindi are replied to in Hindi. The targets prescribed in Annual Programme for Hindi correspondence are continued to be achieved for the last 16 years. To facilitate in doing correspondence in Hindi, 215 standard drafts have been prepared which are being used in the concerned sections so as to work in Hindi to the maximum extent.

Some of the scientists of the Institute write research papers originally in Hindi.

Among the training programmes conducted by training division of this Institute, some programmes are conducted in Hindi/mixed languages.

- **Hindi Noting and Drafting Incentive Scheme :** Hindi Noting and Drafting Incentive Scheme is implemented in the Institute under which in addition to the officials of this Institute, officials of subordinate units also participate and receive award.

- **Official Language Implementation Committee meetings :** Every quarter meeting of the Official Language Implementation Committee under the Chairmanship of the Director of this Institute are organized regularly in which points regarding implementation of Official Language are discussed. Representatives of the Institute participate in every half yearly meeting of the TOLIC, Mysore. In Addition to the Institute, Official Language Implementation Committee is constituted in the subordinate offices also and meetings are also conducted there.

With the cooperation of all the officials, the work of Official Language implementation is under progress and Official Language policy is being complied with.

Hindi Section Officers

****